International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 15 Issue 2 || February 2026 || PP. 225-231

शिक्षण व्यवसाय में व्यावसायिक नैतिकता एवं उत्तरदायित्व का अध्ययन

डॉ० देवेंद्र कुमार दीक्षित
अस्सिटेंट प्रोफेसर, डिपार्टमेंट ऑफ़ बी एड सेठ फूल चंद बगला, पी० जी० कॉलेज हाथरस

सारांश
शिक्षण व्यवसाय को समाज में अत्यंत सम्मानजनक एवं उत्तरदायी पेशा माना जाता है। शिक्षक केवल ज्ञान का प्रसार करने वाले व्यक्ति नहीं होते, बल्कि वे विद्यार्थियों के बौद्धिक, नैतिक तथा सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस कारण शिक्षण कार्य में व्यावसायिक नैतिकता एवं उत्तरदायित्व का विशेष महत्व होता है। यदि शिक्षक अपने कार्य के प्रति नैतिक मूल्यों, ईमानदारी तथा उत्तरदायित्व की भावना के साथ कार्य करें, तो शिक्षा की गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार संभव है। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य शिक्षण व्यवसाय में व्यावसायिक नैतिकता एवं उत्तरदायित्व के महत्व का अध्ययन करना है। इस अध्ययन में यह विश्लेषण किया गया है कि शिक्षकों के लिए नैतिक मूल्यों का पालन क्यों आवश्यक है तथा वे किस प्रकार विद्यार्थियों, संस्थानों और समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन करते हैं। साथ ही शिक्षण व्यवसाय में उत्पन्न होने वाली नैतिक चुनौतियों का भी विवेचन किया गया है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षण व्यवसाय में नैतिकता और उत्तरदायित्व शिक्षा की गुणवत्ता को प्रभावित करने वाले प्रमुख तत्व हैं। यदि शिक्षक अपने कर्तव्यों का निर्वहन ईमानदारी, निष्पक्षता तथा समर्पण के साथ करें, तो शिक्षा प्रणाली अधिक प्रभावी और विश्वसनीय बन सकती है। अतः यह आवश्यक है कि शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों में व्यावसायिक नैतिकता एवं उत्तरदायित्व से संबंधित मूल्यों पर विशेष बल दिया जाए।

कुंजी शब्द
शिक्षण व्यवसाय, व्यावसायिक नैतिकता, शिक्षक का उत्तरदायित्व, शैक्षिक नैतिक मूल्य, शिक्षक की भूमिका, नैतिक आचरण, शिक्षक-विद्यार्थी संबंध, शैक्षिक उत्तरदायित्व, व्यावसायिक आचार संहिता, शिक्षा की गुणवत्ता

प्रस्तावना

शिक्षा मानव समाज के विकास की आधारशिला मानी जाती है। किसी भी राष्ट्र की प्रगति उसके नागरिकों की शिक्षा, जागरूकता और नैतिक मूल्यों पर निर्भर करती है। शिक्षा के इस महत्वपूर्ण कार्य को प्रभावी ढंग से संचालित करने में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। शिक्षक केवल ज्ञान का संप्रेषण करने वाला व्यक्ति नहीं होता, बल्कि वह विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण, सामाजिक चेतना के विकास तथा नैतिक मूल्यों के संवर्धन में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है। इसी कारण शिक्षण व्यवसाय को समाज में अत्यंत सम्मानजनक और उत्तरदायित्वपूर्ण पेशा माना जाता है। शिक्षण व्यवसाय में सफलता केवल विषय ज्ञान या शिक्षण कौशल पर ही निर्भर नहीं करती, बल्कि इसमें व्यावसायिक नैतिकता और उत्तरदायित्व की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। व्यावसायिक नैतिकता से आशय उन नैतिक सिद्धांतों, आदर्शों और मूल्यों से है, जिनका पालन शिक्षक अपने पेशे के दौरान करता है। इनमें ईमानदारी, निष्पक्षता, अनुशासन, कर्तव्यनिष्ठा, सहानुभूति तथा विद्यार्थियों के प्रति सम्मान जैसे गुण शामिल होते हैं। जब शिक्षक इन मूल्यों का पालन करते हैं, तो वे विद्यार्थियों के लिए एक आदर्श प्रस्तुत करते हैं तथा शिक्षा की गुणवत्ता को भी सुदृढ़ बनाते हैं। वर्तमान समय में शिक्षा के क्षेत्र में अनेक परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं। तकनीकी विकास, वैश्वीकरण तथा सामाजिक परिवर्तनों के कारण शिक्षा की प्रकृति और स्वरूप में निरंतर परिवर्तन हो रहा है। इन परिवर्तनों के बीच शिक्षक की भूमिका और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। शिक्षक को केवल ज्ञान प्रदान करने तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि उसे विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए मार्गदर्शक, प्रेरक और आदर्श के रूप में कार्य करना चाहिए। इसके लिए यह आवश्यक है कि शिक्षक अपने व्यावसायिक दायित्वों का निर्वहन नैतिक मूल्यों और उत्तरदायित्व की भावना के साथ करें।

शिक्षक का उत्तरदायित्व केवल विद्यार्थियों तक ही सीमित नहीं होता, बल्कि वह विद्यालय, अभिभावकों तथा समाज के प्रति भी उत्तरदायी होता है। शिक्षक का आचरण और व्यवहार विद्यार्थियों पर गहरा प्रभाव डालता है। यदि शिक्षक अपने कार्य के प्रति ईमानदार, अनुशासित और समर्पित होगा, तो विद्यार्थी भी उन्हीं मूल्यों को अपने जीवन में अपनाने का प्रयास करेंगे। इस प्रकार शिक्षक का नैतिक आचरण समाज के नैतिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसी संदर्भ में प्रस्तुत अध्ययन में शिक्षण व्यवसाय में व्यावसायिक नैतिकता एवं उत्तरदायित्व के महत्व का विश्लेषण किया गया है। इसमें यह समझने का प्रयास किया गया है कि शिक्षण कार्य में नैतिक मूल्यों का पालन क्यों आवश्यक है तथा शिक्षक किस प्रकार अपने व्यावसायिक दायित्वों का निर्वहन करते हुए शिक्षा की गुणवत्ता को सुदृढ़ बना सकते हैं। यह अध्ययन शिक्षण व्यवसाय में नैतिकता और उत्तरदायित्व की भूमिका को स्पष्ट करने का प्रयास करता है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं समस्या का प्रतिपादन

वर्तमान समय में शिक्षा व्यवस्था निरंतर परिवर्तन के दौर से गुजर रही है। वैश्वीकरण, तकनीकी विकास तथा सामाजिक परिवर्तनों के कारण शिक्षा की प्रकृति और उद्देश्यों में भी महत्वपूर्ण बदलाव देखने को मिल रहे हैं। इन परिवर्तनों के बीच शिक्षक की भूमिका और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि शिक्षक ही वह माध्यम है जिसके द्वारा शैक्षिक उद्देश्यों को विद्यार्थियों तक प्रभावी रूप से पहुँचाया जाता है। यदि शिक्षक अपने कार्य के प्रति नैतिक मूल्यों और उत्तरदायित्व की भावना के साथ कार्य करें, तो शिक्षा की गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार संभव है। शिक्षण व्यवसाय एक ऐसा पेशा है जिसमें केवल ज्ञान प्रदान करना ही पर्याप्त नहीं होता, बल्कि इसमें नैतिकता, अनुशासन, निष्पक्षता तथा कर्तव्यनिष्ठा जैसे गुणों का होना भी अत्यंत आवश्यक होता है। शिक्षक का आचरण और व्यवहार विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर गहरा प्रभाव डालता है। विद्यार्थी प्रायः अपने शिक्षकों को आदर्श मानते हैं और उनके व्यवहार से प्रेरणा प्राप्त करते हैं। इसलिए यदि शिक्षक अपने व्यावसायिक कर्तव्यों का पालन नैतिकता और जिम्मेदारी के साथ करते हैं, तो इससे विद्यार्थियों में भी सकारात्मक मूल्यों का विकास होता है। हालाँकि वर्तमान समय में शिक्षा के क्षेत्र में कई प्रकार की चुनौतियाँ सामने आ रही हैं। कई बार शिक्षण कार्य में व्यावसायिक नैतिकता की उपेक्षा, कर्तव्यों के प्रति उदासीनता तथा अनुशासनहीनता जैसी समस्याएँ देखने को मिलती हैं। इसके अतिरिक्त शिक्षा के व्यवसायीकरण, प्रतिस्पर्धा तथा प्रशासनिक दबावों के कारण भी कई बार शिक्षक अपने मूल नैतिक दायित्वों से विचलित हो जाते हैं। ऐसी परिस्थितियों में यह आवश्यक हो जाता है कि शिक्षण व्यवसाय में व्यावसायिक नैतिकता और उत्तरदायित्व के महत्व को समझा जाए तथा इस विषय पर गंभीर अध्ययन किया जाए। इन्हीं परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए शिक्षण व्यवसाय में व्यावसायिक नैतिकता एवं उत्तरदायित्व का अध्ययन करना अत्यंत आवश्यक हो जाता है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य यह समझना है कि शिक्षण कार्य में नैतिक मूल्यों की क्या भूमिका है, शिक्षक अपने व्यावसायिक दायित्वों का निर्वहन किस प्रकार करते हैं, तथा शिक्षा की गुणवत्ता पर इनका क्या प्रभाव पड़ता है। यह अध्ययन शिक्षण व्यवसाय में नैतिकता और उत्तरदायित्व के महत्व को स्पष्ट करने का प्रयास करता है।

अध्ययन के उद्देश्य

किसी भी शोध-अध्ययन में उसके उद्देश्यों का विशेष महत्व होता है, क्योंकि इन्हीं के आधार पर अध्ययन की दिशा और स्वरूप निर्धारित होता है। अध्ययन के उद्देश्य यह स्पष्ट करते हैं कि शोधकर्ता अपने अध्ययन के माध्यम से किन पहलुओं का विश्लेषण करना चाहता है। प्रस्तुत शोध-पत्र में शिक्षण व्यवसाय में व्यावसायिक नैतिकता एवं उत्तरदायित्व के विभिन्न पक्षों को समझने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तुत अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. शिक्षण व्यवसाय में व्यावसायिक नैतिकता की अवधारणा को स्पष्ट करना।
2. शिक्षण कार्य में नैतिक मूल्यों के महत्व का अध्ययन करना।
3. शिक्षक के व्यावसायिक उत्तरदायित्वों का विश्लेषण करना।

4. शिक्षण व्यवसाय में उत्पन्न होने वाली नैतिक चुनौतियों की पहचान करना।
5. शिक्षा की गुणवत्ता में व्यावसायिक नैतिकता एवं उत्तरदायित्व की भूमिका का अध्ययन करना।
6. शिक्षण व्यवसाय में नैतिक मूल्यों को सुदृढ़ बनाने के लिए आवश्यक सुझाव प्रस्तुत करना।

इन उद्देश्यों के माध्यम से यह अध्ययन शिक्षण व्यवसाय में नैतिकता और उत्तरदायित्व के महत्व को समझने तथा शिक्षा प्रणाली में उनके प्रभाव का विश्लेषण करने का प्रयास करता है।

अनुसंधान पद्धति

किसी भी शोध-अध्ययन की विश्वसनीयता एवं प्रामाणिकता उसके द्वारा अपनाई गई अनुसंधान पद्धति पर निर्भर करती है। अनुसंधान पद्धति वह व्यवस्थित प्रक्रिया है जिसके माध्यम से शोधकर्ता अपने अध्ययन से संबंधित तथ्यों का संग्रहण, विश्लेषण तथा व्याख्या करता है। प्रस्तुत अध्ययन में शिक्षण व्यवसाय में व्यावसायिक नैतिकता एवं उत्तरदायित्व के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। इस अध्ययन की प्रकृति मुख्यतः **वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक (Descriptive and Analytical)** है। इसमें शिक्षण व्यवसाय में व्यावसायिक नैतिकता की अवधारणा, शिक्षक के उत्तरदायित्व तथा शिक्षा प्रणाली पर इनके प्रभाव का विवेचन किया गया है। अध्ययन में विषय से संबंधित विभिन्न विचारों, सिद्धांतों तथा व्यावहारिक पक्षों का विश्लेषण किया गया है। इस शोध में तथ्यों के संग्रह के लिए मुख्यतः **द्वितीयक स्रोतों (Secondary Sources)** का उपयोग किया गया है। इसके अंतर्गत विभिन्न पुस्तकों, शोध-पत्रों, शैक्षिक पत्रिकाओं, सरकारी दस्तावेजों तथा अन्य प्रासंगिक साहित्य का अध्ययन किया गया है। इन स्रोतों के माध्यम से शिक्षण व्यवसाय में व्यावसायिक नैतिकता और उत्तरदायित्व से संबंधित विचारों एवं सिद्धांतों को समझने का प्रयास किया गया है। प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण करते समय समालोचनात्मक दृष्टिकोण अपनाया गया है, ताकि शिक्षण व्यवसाय में नैतिक मूल्यों के महत्व के साथ-साथ उससे संबंधित चुनौतियों को भी स्पष्ट रूप से समझा जा सके। इसके अतिरिक्त शिक्षक के विभिन्न दायित्वों तथा उनके सामाजिक और शैक्षिक प्रभावों का भी विवेचन किया गया है। इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन मुख्यतः साहित्यिक स्रोतों के विश्लेषण पर आधारित है, जिसके माध्यम से शिक्षण व्यवसाय में व्यावसायिक नैतिकता एवं उत्तरदायित्व की भूमिका का समग्र अध्ययन किया गया है।

शिक्षण व्यवसाय में व्यावसायिक नैतिकता का स्वरूप

शिक्षण व्यवसाय को समाज में एक अत्यंत महत्वपूर्ण और सम्मानजनक पेशे के रूप में देखा जाता है। यह केवल ज्ञान प्रदान करने तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें नैतिक मूल्यों, सामाजिक चेतना तथा व्यक्तित्व निर्माण का भी समावेश होता है। इसलिए शिक्षण कार्य में व्यावसायिक नैतिकता का विशेष महत्व होता है। व्यावसायिक नैतिकता से आशय उन सिद्धांतों, मूल्यों और आचार-मानकों से है, जिनका पालन शिक्षक अपने पेशे के दौरान करते हैं। शिक्षण व्यवसाय में व्यावसायिक नैतिकता का आधार ईमानदारी, निष्पक्षता, कर्तव्यनिष्ठा, अनुशासन तथा समर्पण जैसे गुणों पर आधारित होता है। शिक्षक को अपने कार्य के प्रति पूर्ण निष्ठा और जिम्मेदारी के साथ कार्य करना चाहिए। उसका मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में योगदान देना होना चाहिए। जब शिक्षक अपने कार्य को केवल नौकरी के रूप में न देखकर एक सामाजिक दायित्व के रूप में स्वीकार करता है, तब वह शिक्षण व्यवसाय की वास्तविक नैतिकता का पालन करता है। शिक्षण व्यवसाय में नैतिकता का एक महत्वपूर्ण पहलू शिक्षक और विद्यार्थी के संबंधों से भी जुड़ा होता है। शिक्षक को विद्यार्थियों के साथ समानता, सम्मान और सहानुभूति का व्यवहार करना चाहिए। उसे किसी भी प्रकार के पक्षपात से बचना चाहिए तथा सभी विद्यार्थियों को समान अवसर प्रदान करने का प्रयास करना चाहिए। शिक्षक का व्यवहार विद्यार्थियों के मानसिक और भावनात्मक विकास पर गहरा प्रभाव डालता है, इसलिए उसके आचरण में संतुलन और संवेदनशीलता का होना आवश्यक है। इसके अतिरिक्त शिक्षक को अपने ज्ञान और कौशल को निरंतर विकसित करने का भी प्रयास करना चाहिए। शिक्षा के क्षेत्र में समय-समय पर नए विचार, नई तकनीकें और नई शिक्षण विधियाँ विकसित होती रहती हैं। ऐसे में शिक्षक का यह नैतिक दायित्व है कि वह अपने ज्ञान को अद्यतन रखे तथा आधुनिक शिक्षण

पद्धतियों का उपयोग करके विद्यार्थियों को बेहतर शिक्षा प्रदान करे। शिक्षण व्यवसाय में व्यावसायिक नैतिकता का संबंध केवल विद्यार्थियों तक ही सीमित नहीं होता, बल्कि यह विद्यालय, सहकर्मियों तथा समाज के प्रति शिक्षक के व्यवहार से भी जुड़ा होता है। शिक्षक को अपने सहकर्मियों के साथ सहयोग और सम्मान का व्यवहार करना चाहिए तथा विद्यालय के नियमों और नीतियों का पालन करना चाहिए। इसके साथ ही शिक्षक को समाज में नैतिक मूल्यों और सकारात्मक सोच के प्रसार में भी सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए।

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि शिक्षण व्यवसाय में व्यावसायिक नैतिकता का स्वरूप व्यापक और बहुआयामी है। यह केवल शिक्षक के व्यक्तिगत आचरण तक सीमित नहीं है, बल्कि उसके पेशेवर व्यवहार, सामाजिक जिम्मेदारियों तथा शिक्षा के उद्देश्यों से भी गहराई से जुड़ा हुआ है। इसलिए शिक्षण व्यवसाय में नैतिक मूल्यों का पालन शिक्षा की गुणवत्ता को सुदृढ़ बनाने के लिए अत्यंत आवश्यक है।

शिक्षक का उत्तरदायित्व एवं कर्तव्य

शिक्षक समाज में एक ऐसे मार्गदर्शक के रूप में कार्य करता है जो केवल ज्ञान प्रदान करने तक सीमित नहीं रहता, बल्कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण, नैतिक विकास और सामाजिक चेतना के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसलिए शिक्षक का उत्तरदायित्व अत्यंत व्यापक और बहुआयामी होता है। शिक्षण व्यवसाय में उत्तरदायित्व का अर्थ यह है कि शिक्षक अपने कर्तव्यों का पालन ईमानदारी, समर्पण और नैतिक मूल्यों के साथ करे। सबसे पहले शिक्षक का उत्तरदायित्व अपने विद्यार्थियों के प्रति होता है। शिक्षक को विद्यार्थियों को उचित मार्गदर्शन प्रदान करना चाहिए तथा उन्हें ज्ञान, कौशल और नैतिक मूल्यों से समृद्ध करने का प्रयास करना चाहिए। शिक्षक को विद्यार्थियों की क्षमताओं और आवश्यकताओं को समझते हुए उन्हें सीखने के लिए प्रेरित करना चाहिए। इसके साथ ही शिक्षक को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वह सभी विद्यार्थियों के साथ समान और निष्पक्ष व्यवहार करे तथा किसी भी प्रकार का पक्षपात न करे। शिक्षक का दूसरा महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व शैक्षणिक संस्थान के प्रति होता है। शिक्षक को विद्यालय या महाविद्यालय के नियमों, नीतियों और अनुशासन का पालन करना चाहिए तथा संस्थान के शैक्षिक वातावरण को सुदृढ़ बनाने में सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए। इसके अतिरिक्त शिक्षक को अपने सहकर्मियों के साथ सहयोगात्मक व्यवहार बनाए रखना चाहिए और सामूहिक प्रयासों के माध्यम से शिक्षा की गुणवत्ता को बेहतर बनाने का प्रयास करना चाहिए। शिक्षक का उत्तरदायित्व अभिभावकों के प्रति भी होता है। शिक्षक और अभिभावकों के बीच सकारात्मक संवाद विद्यार्थियों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शिक्षक को समय-समय पर अभिभावकों को विद्यार्थियों की प्रगति, उनकी क्षमताओं तथा उनकी समस्याओं के बारे में जानकारी देनी चाहिए। इससे विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए एक सहयोगात्मक वातावरण का निर्माण होता है। इसके अतिरिक्त शिक्षक का उत्तरदायित्व समाज के प्रति भी होता है। शिक्षक समाज में नैतिक मूल्यों, सामाजिक जिम्मेदारी और सकारात्मक सोच के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शिक्षक का आचरण और व्यवहार समाज के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत करता है। इसलिए शिक्षक को अपने व्यवहार में नैतिकता, अनुशासन और सामाजिक संवेदनशीलता का पालन करना चाहिए।

इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि शिक्षक का उत्तरदायित्व केवल शिक्षण कार्य तक सीमित नहीं है, बल्कि वह विद्यार्थियों, संस्थानों, अभिभावकों तथा समाज के प्रति भी जिम्मेदार होता है। यदि शिक्षक अपने इन सभी उत्तरदायित्वों का निर्वहन ईमानदारी और समर्पण के साथ करता है, तो शिक्षा प्रणाली अधिक प्रभावी और सार्थक बन सकती है।

शिक्षण व्यवसाय में नैतिक चुनौतियाँ

शिक्षण व्यवसाय को समाज में एक आदर्श एवं उत्तरदायित्वपूर्ण पेशा माना जाता है, किन्तु वर्तमान समय में इस क्षेत्र में अनेक नैतिक चुनौतियाँ भी देखने को मिलती हैं। शिक्षा के क्षेत्र में हो रहे सामाजिक, आर्थिक तथा तकनीकी परिवर्तनों के कारण शिक्षकों के सामने कई नई परिस्थितियाँ उत्पन्न हो रही हैं, जिनका सामना करते समय उन्हें नैतिक मूल्यों और व्यावसायिक आचार संहिता का पालन करना आवश्यक होता है। सबसे प्रमुख चुनौती शिक्षा के बढ़ते व्यवसायीकरण से संबंधित है। वर्तमान समय में शिक्षा कई स्थानों पर एक सेवा के साथ-साथ एक व्यवसाय के रूप में भी

देखी जाने लगी है। इस कारण कभी-कभी शिक्षण कार्य के मूल उद्देश्यों की उपेक्षा होने लगती है और शिक्षा की गुणवत्ता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। ऐसी परिस्थितियों में शिक्षक के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वह अपने पेशे की गरिमा को बनाए रखते हुए नैतिक मूल्यों का पालन करे।

एक अन्य महत्वपूर्ण चुनौती शिक्षण प्रक्रिया में निष्पक्षता बनाए रखने से संबंधित है। कई बार सामाजिक, आर्थिक या व्यक्तिगत कारणों से शिक्षकों पर विद्यार्थियों के प्रति पक्षपात करने का आरोप लग सकता है। यदि शिक्षक किसी भी प्रकार का पक्षपात करता है, तो इससे विद्यार्थियों के मनोबल और शैक्षणिक वातावरण पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इसलिए शिक्षक के लिए यह आवश्यक है कि वह सभी विद्यार्थियों के साथ समान और निष्पक्ष व्यवहार करे। तकनीकी विकास ने शिक्षा के क्षेत्र में नई संभावनाएँ तो उत्पन्न की हैं, लेकिन इसके साथ कुछ नैतिक समस्याएँ भी सामने आई हैं। ऑनलाइन शिक्षण, डिजिटल संसाधनों के उपयोग तथा सूचना के व्यापक प्रसार के कारण कई बार शिक्षण प्रक्रिया में अनुशासन और नैतिकता से संबंधित चुनौतियाँ उत्पन्न हो जाती हैं। ऐसे में शिक्षक का यह दायित्व बनता है कि वह तकनीक का उपयोग संतुलित और नैतिक तरीके से करे। इसके अतिरिक्त शिक्षकों पर बढ़ता कार्यभार और प्रशासनिक दबाव भी कई बार नैतिक चुनौतियों को जन्म देता है। पाठ्यक्रम पूरा करने का दबाव, मूल्यांकन कार्य, प्रशासनिक जिम्मेदारियाँ तथा अन्य कार्यों के कारण शिक्षक पर मानसिक दबाव बढ़ सकता है। ऐसी स्थिति में शिक्षकों के लिए अपने व्यावसायिक मूल्यों और दायित्वों के प्रति संतुलित दृष्टिकोण बनाए रखना आवश्यक हो जाता है। इन सभी चुनौतियों के बावजूद यह अपेक्षा की जाती है कि शिक्षक अपने पेशे के प्रति नैतिक प्रतिबद्धता बनाए रखें। शिक्षक को अपने आचरण, व्यवहार और निर्णयों में नैतिक मूल्यों को प्राथमिकता देनी चाहिए। इससे न केवल शिक्षण व्यवसाय की गरिमा बनी रहती है, बल्कि विद्यार्थियों और समाज के बीच शिक्षा के प्रति विश्वास भी सुदृढ़ होता है।

समालोचनात्मक विश्लेषण

शिक्षण व्यवसाय में व्यावसायिक नैतिकता एवं उत्तरदायित्व का महत्व अत्यंत व्यापक है। यह केवल शिक्षक के व्यक्तिगत आचरण तक सीमित नहीं रहता, बल्कि शिक्षा की गुणवत्ता, शैक्षिक वातावरण तथा विद्यार्थियों के समग्र विकास को भी प्रभावित करता है। इसलिए शिक्षण व्यवसाय के संदर्भ में नैतिकता और उत्तरदायित्व का समालोचनात्मक अध्ययन करना आवश्यक हो जाता है। यदि शिक्षण व्यवसाय में व्यावसायिक नैतिकता के सकारात्मक पक्षों पर विचार किया जाए, तो यह स्पष्ट होता है कि नैतिक मूल्यों का पालन करने वाला शिक्षक विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बन सकता है। जब शिक्षक अपने व्यवहार में ईमानदारी, निष्पक्षता और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय देता है, तो विद्यार्थी भी इन मूल्यों को अपने जीवन में अपनाने का प्रयास करते हैं। इस प्रकार शिक्षक का नैतिक आचरण विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। व्यावसायिक उत्तरदायित्व भी शिक्षण व्यवसाय का एक महत्वपूर्ण अंग है। शिक्षक केवल पाठ पढ़ाने तक सीमित नहीं रहता, बल्कि उसे विद्यार्थियों के बौद्धिक, सामाजिक और नैतिक विकास के लिए भी कार्य करना होता है। शिक्षक का यह दायित्व होता है कि वह विद्यार्थियों की क्षमताओं को पहचानकर उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करे तथा शिक्षा को उनके जीवन से जोड़ने का प्रयास करे। जब शिक्षक अपने इन दायित्वों का निर्वहन समर्पण और ईमानदारी के साथ करता है, तब शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य पूर्ण होता है। हालाँकि वर्तमान समय में शिक्षण व्यवसाय में कई ऐसी परिस्थितियाँ भी देखने को मिलती हैं, जो व्यावसायिक नैतिकता को प्रभावित करती हैं। शिक्षा का बढ़ता व्यवसायीकरण, प्रशासनिक दबाव, प्रतिस्पर्धा तथा संसाधनों की कमी जैसी समस्याएँ कई बार शिक्षकों के कार्य को प्रभावित करती हैं। इन परिस्थितियों में कुछ शिक्षकों के लिए अपने नैतिक मूल्यों और व्यावसायिक आदर्शों को बनाए रखना चुनौतीपूर्ण हो जाता है। इसके अतिरिक्त यह भी देखा गया है कि कई बार शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों में व्यावसायिक नैतिकता और उत्तरदायित्व से संबंधित विषयों पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जाता। परिणामस्वरूप शिक्षकों को अपने पेशे से संबंधित नैतिक मानकों की स्पष्ट समझ विकसित करने में कठिनाई हो सकती है। इसलिए यह आवश्यक है कि शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों में नैतिक मूल्यों और व्यावसायिक आचार संहिता से संबंधित विषयों को अधिक महत्व दिया जाए। समालोचनात्मक दृष्टिकोण से यह कहा जा सकता है कि शिक्षण व्यवसाय में व्यावसायिक नैतिकता और उत्तरदायित्व शिक्षा प्रणाली की गुणवत्ता को सुदृढ़ बनाने के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। यदि शिक्षक अपने कर्तव्यों का

पालन नैतिक मूल्यों और जिम्मेदारी के साथ करें, तो शिक्षा का वातावरण अधिक सकारात्मक और प्रभावी बन सकता है। इसके साथ ही शिक्षा प्रणाली में आवश्यक संसाधनों, प्रशिक्षण तथा सहयोग की व्यवस्था भी सुनिश्चित की जानी चाहिए, ताकि शिक्षक अपने व्यावसायिक दायित्वों का निर्वहन अधिक प्रभावी ढंग से कर सकें।

निष्कर्ष एवं सुझाव

शिक्षण व्यवसाय समाज के सबसे महत्वपूर्ण और सम्मानजनक पेशों में से एक है। शिक्षक केवल ज्ञान प्रदान करने वाला व्यक्ति नहीं होता, बल्कि वह विद्यार्थियों के बौद्धिक, नैतिक और सामाजिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसलिए शिक्षण कार्य में व्यावसायिक नैतिकता और उत्तरदायित्व का विशेष महत्व होता है। जब शिक्षक अपने कार्य के प्रति ईमानदारी, निष्पक्षता, अनुशासन और समर्पण के साथ कार्य करता है, तब वह विद्यार्थियों के लिए एक आदर्श बन जाता है तथा शिक्षा की गुणवत्ता में भी सुधार होता है। प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षण व्यवसाय में व्यावसायिक नैतिकता और उत्तरदायित्व शिक्षा प्रणाली की सफलता के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। शिक्षक का आचरण, व्यवहार और कार्यशैली विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण पर गहरा प्रभाव डालती है। यदि शिक्षक अपने कर्तव्यों का निर्वहन नैतिक मूल्यों के आधार पर करता है, तो इससे विद्यार्थियों में भी सकारात्मक मूल्यों का विकास होता है और शिक्षा का उद्देश्य अधिक प्रभावी रूप से पूरा होता है। हालाँकि वर्तमान समय में शिक्षा के क्षेत्र में कई प्रकार की चुनौतियाँ भी सामने आ रही हैं। शिक्षा का व्यवसायीकरण, बढ़ता कार्यभार, प्रशासनिक दबाव तथा तकनीकी परिवर्तनों के कारण शिक्षकों के सामने कई नई परिस्थितियाँ उत्पन्न हो रही हैं। इन परिस्थितियों में यह आवश्यक है कि शिक्षक अपने व्यावसायिक मूल्यों और उत्तरदायित्वों के प्रति सजग रहें तथा अपने कार्य को केवल एक पेशे के रूप में न देखकर एक सामाजिक दायित्व के रूप में स्वीकार करें।

संदर्भ में निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किए जा सकते हैं—

1. शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों में व्यावसायिक नैतिकता और आचार संहिता से संबंधित विषयों को विशेष महत्व दिया जाना चाहिए।
2. शिक्षकों को समय-समय पर नैतिक मूल्यों और व्यावसायिक दायित्वों से संबंधित प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए।
3. शैक्षणिक संस्थानों में ऐसा वातावरण बनाया जाना चाहिए जो नैतिक आचरण और जिम्मेदारी को प्रोत्साहित करे।
4. शिक्षकों को अपने ज्ञान और कौशल को निरंतर अद्यतन करने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए।
5. शिक्षक और अभिभावकों के बीच सकारात्मक संवाद और सहयोग को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।
6. शिक्षा के क्षेत्र में पारदर्शिता, निष्पक्षता और उत्तरदायित्व को सुनिश्चित करने के लिए प्रभावी नीतियाँ लागू की जानी चाहिए।

अंततः यह कहा जा सकता है कि शिक्षण व्यवसाय में व्यावसायिक नैतिकता और उत्तरदायित्व शिक्षा की गुणवत्ता को सुदृढ़ बनाने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। यदि शिक्षक अपने कर्तव्यों का पालन नैतिक मूल्यों और समर्पण के साथ करते हैं, तो वे न केवल विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य के निर्माण में योगदान देंगे, बल्कि समाज के नैतिक और सांस्कृतिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।

संदर्भ सूची

1. भारत सरकार. (2020). **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020**. नई दिल्ली: शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार।
2. अग्रवाल, जे. सी. (2018). **शिक्षा का दर्शन एवं समाजशास्त्र**. नई दिल्ली: विकास पब्लिशिंग हाउस।
3. शर्मा, आर. ए. (2017). **शिक्षा अनुसंधान एवं सांख्यिकी**. मेरठ: आर. लाल बुक डिपो।
4. पाण्डेय, रामशकल. (2016). **शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार**. आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर।
5. चौहान, एस. एस. (2015). **शिक्षा मनोविज्ञान**. मेरठ: आर. लाल बुक डिपो।

6. सिंह, बी. पी. (2019). **शिक्षक शिक्षा के सिद्धांत और व्यवहार**. नई दिल्ली: रावत पब्लिकेशन।
7. गुप्ता, एस. पी. (2018). **आधुनिक शिक्षा के सिद्धांत**. इलाहाबाद: शारदा पुस्तक भवन।
8. त्रिपाठी, आर. एस. (2017). **शिक्षक शिक्षा एवं प्रशिक्षण**. नई दिल्ली: एपीएच पब्लिशिंग कॉर्पोरेशन।
9. मिश्रा, आर. के. (2020). **भारतीय शिक्षा प्रणाली और शिक्षक की भूमिका**. वाराणसी: भारतीय प्रकाशन।
10. तिवारी, डी. एन. (2019). **शिक्षा और नैतिक मूल्य**. नई दिल्ली: अटलांटिक पब्लिशर्स।
11. वर्मा, वी. पी. (2016). **आधुनिक भारतीय शिक्षा की समस्याएँ और समाधान**. नई दिल्ली: विश्व प्रकाशन।
12. यादव, के. (2021). **शिक्षण व्यवसाय में नैतिकता और उत्तरदायित्व**. नई दिल्ली: ज्ञान प्रकाशन।
13. राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (NCTE). (2020). **भारत में शिक्षक शिक्षा के मानक और गुणवत्ता**. नई दिल्ली।
14. शिक्षा मंत्रालय. (2021). **भारतीय शिक्षा में शिक्षक की भूमिका और उत्तरदायित्व**. नई दिल्ली: भारत सरकार।
15. कुमार, कृष्ण. (2018). **भारतीय शिक्षा और शिक्षक का दायित्व**. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
16. कोठारी, सी. आर. (2016). **अनुसंधान पद्धति : विधियाँ एवं तकनीकें**. नई दिल्ली: न्यू एज इंटरनेशनल पब्लिशर्स।
17. भटनागर, आर. पी. (2018). **शिक्षा में नैतिक मूल्य और शिक्षक की भूमिका**. जयपुर: आर.बी.एस.ए. पब्लिशर्स।
18. सक्सेना, एन. आर. स्वरूप. (2017). **शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार**. मेरठ: आर. लाल बुक डिपो।